

Pankaj Kumar Badal
12/01/2025, 22:15:36

(v) भारत में नागरिकता किस प्रकार राष्ट्र-निर्दिश के बाबन के रूप में कर्त्ता कहते हैं, इसका वरीष्ठणा कीजिये। अब विदेश सुधारों की दृष्टि से आज समाज मानवारी मुनिधिपत करने के लिए क्या विकल रखी है? संविधानित संविधानित भावनाओं और दृष्टिकोणों के साथ क्या कीजिये?

नागरिकता, न केवल राजनीति की ओर अत्यधिकारों की बोलती है बल्कि, राष्ट्र निर्दिश में भी महत्वपूर्ण नागरिकता विभाग है। यहाँ विभाग के बहुतीयतावाची परिवर्तनों में नागरिकता के मूल अवलोकन, जो आज समाज मानवारी, बहलती हुई विदेशी है।

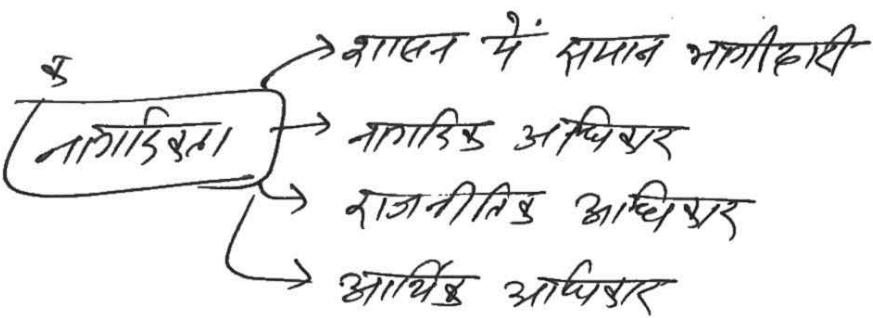
नागरिकता परिवर्तनों की

अनुमोदन, संविधान में नागरिकता भी क्योंकि प्राक्षयल अनुरक्षण 5-11 (आगे-2) में उपर गया / सामाजिक अनुमोदन-11 में संशोध को नागरिकता संबंधी विभाग वर्तमान की वास्तविकता की गई। नागरिकता अधिनियम-1955 की लेकर नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 के नागरिकता की प्रकृति समय और परिवर्तनों के अनुराग बहलती हुई है।

इस बहलती प्रकृति के बाबन,

नागरिकता अपने मूल प्रकृति, जो आजकी समाज मानवारी, बाह्य निर्दिश में बहुत बदल दी गई है। इन आदर्शों के विवरणित रूप से खोजना चाहिए।

- ① नागरिकता प्रदेश द्वारे दाखिल, मलै ही राज्य की दी
गई है, लैंडिंग पर विविध और सम्बन्धित होने के लिए
प्रहृष्टि द्वारा परिणाम है। पर इसकी दौलतों के अधिक
अपै आविष्कार एवं उत्तरवाचिकता उठता है।
- (ii) नागरिकता अपै द्विवार के प्रधानवेशी है। इस नागरिकता
के लिए कुलिनिकृत कहती है —



- (iii) नागरिक आविष्कारों की संख्या का आविष्कार (अनुच्छेद-17)
आविष्कारित की दर्शकता (अनुच्छेद-19) और और उपलब्धिगम
क्षमता का आविष्कार (अनुच्छेद-21) इसापि, जातिल है।

- (iv) राजनीतिक आविष्कारों की —

- तुलना द्वारा प्रतिकार द्वारा आविष्कार
- सांघर्जनिक दर्शकों द्वारा तुलना लेने का आविष्कार
- लोक्यता की अपनी विषयता द्वारा उड़ाने द्वारा आविष्कार,
इसापि जातिल है।

- (v) आविष्कार आविष्कारों की —

- काम और आजीविका द्वारा वित्त
- संपत्ति द्वारा वित्त
- सांघर्जनिक दर्शकों और ज्ञानकीड़ द्वारा वित्त वित्त
वित्त, इसापि जातिल है।

(vii) अग्निकार, अग्निकीर्णे तथा विद्युत्या विद्युत्कारिकारों के
अवस्थाओं उत्तम न होनेका कारण है। इन्हीं विद्युत्कारिकारों के
विकास-

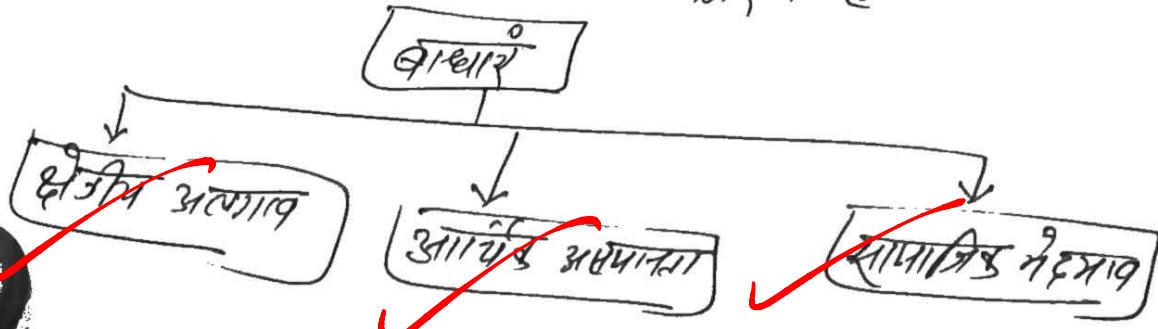
- ਮੁਹਿੰਦਰ ਅੰਕੂ ਰਾਫ਼ੀਪ ਵਕਤ ਦੀ ਸ਼ਹਿਰ ਦੇਣਾ।
 - ਮਾਨਸ ਦੀ ਦੁੱਖੁਤਾ, ਬਲਦਾ ਅੰਕੂ ਤੁਹਾਂਦਾ ਦੀ ਰੜਾ। ਰੜਾ।
 - ਸਾਡਾ ਪਗਾ ਅੰਕੂ ਸਾਡਾ ਦੀ ਮਾਵਾ। ਦੀ ਬਚਾਕ ਦੇਣਾ।
 - ਹਾਕੰਜਾਂਦੇ ਦੁੱਖੀ ਦੀ ਰੜਾ ਰੜਾ ਅੰਕੂ ਹਿੰਦਾ ਦੀ ਰੜਾ।
 - ਹੈਂਡਾਲਕ ਹੁਕਿਕਤ ਦੀ ਬਹਾਕ ਦੇਣਾ, ਹੁਕਤ।

(vii) गोमांडि कला ने उनका गोमांडि की ओर अधिकार है।
विशेष रूप से यह वास्तव कला की ओर गोमांडि
अधिकार है। इसका एक अद्यता

દેશ એ કરતું નાગરિકતા વિકાસની
પ્રાપ્ત રૂપોથી જાહેર તથા માનવજી નાગરિક અધિકારે.
કુશળ પેંડે વાણી વિજિત રી ષણીએ કો કુદું
કરતી હી

ଯୁଦ୍ଧ ଏହା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

ଅୟବୀ ମ୍ୟାରେଶ୍ଵି ସହିତ କେ ପାଞ୍ଚଟଙ୍କ ନାହିଁ ତା
ପୁଣି ଆଜି ଦୂରା ମାଗିଥାବି କୁଳିନ୍ଧିତ ହୁଏ କେ କେ ଅନ୍ଧା
ରେ କେ କେ ଜିବାକୁ ଲିପାଲିଶିବ କାହାର କେ —

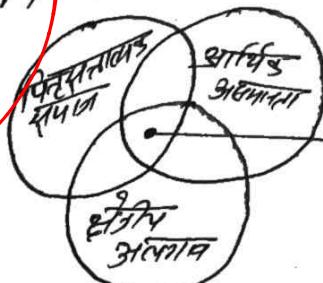


① क्षेत्रीय अल्पाधि :- दूरदूज के बिना दी गुणवत्ता नोंचा
 की तरी के कारण नागारिक अधिकारों की पहुंच
 सीमित हो जाती है। इसका उदाहरण यह ज्वाला नामकी
 दी देख सकते हैं।

(ii) आर्थिक असमानता :- गरीबी के कुलप्रकाश के 51%
 स्वास्थ्य, शिक्षा, आरोग्य संरक्षण सहित मौजूदा
 अधिकार सीमित हो जाता है। बुआपादी गरीबी स्वभावित
 में शामिल होती है। यहाँ और दूसरा गोलीदारी सुनिश्चित
 हो हो जाती है।

(iii) सामाजिक अल्पाधि :- भूमिकादी और वित्तीय सम्पत्ति
 की असमानता, जीवन आर्थिक असमानता के आधार पर अल्पाधि
 की प्रकृति पक्की प्रकृति है। इस तरह यह एक ऐसी विद्यार्थी
 की प्रकृति है।

18/38



विद्यार्थी/छात्रावासी प्रदूषित
 विद्यालयी

9000

विषयवस्तु: क्षेत्रीय अल्पाधि विषय के साथ
 के लिए इसकी उद्दीप्ति है। इसके उद्देश्यों में से यह
 की क्षमता है। यह राज्य के अन्तर्गत, संतुलित और
 अधिकार अधिकारित दृष्टिकोण अपनाने की ओर बढ़कर है।

Last Part ??

Q2) भारत में संकृतिक विद्या का प्राचीन इतिहास
हुलना दे छोड़ दे आधिक प्रवक्त जिन्हें इन्हें
बनाती है, इसका सम्बोधनाम विश्ववेदना अन्तिम।
प्राचीन विद्या और (विद्यालय घटे) नह गुणों
के जनन दे दिए प्राचीन भूद्विद निष्ठा है? इस
संग्रही दे दिलीच गति तुर्कांन आपका ए प्राचीन
दा वर्षों की है।

Q3) भारत संकृतिक विद्यता वाला हैरा है। अहविद्या
धार्मिक हे साथ-साथ भाषा, जातीय (दयनिष्ठ) और
भौगोलिक कारणों दो प्रदूषित है।

✓ भारत में गुणों का विद्यो
प्रदूषों में, वाच्य तुर्कांन जनकीमिय 1955, हे अस्वार
ए, भाषा हे आवार ए, यित्र पश्चात्यान्तिक
विद्यो हे आवार ए तथा अग्नि चलापुर
स्वास्थ्य अस्वार ए उपा गया है, इसके
उपर्युक्त अस्वार अंग्रेजी, हिन्दी नाम
जारीकर्त है।

✓ सेवा सदा गया हि भाषा हा
स्वास्थ्य अस्वार ए विद्युत देख रुक्ष संकृतिक
हृति हे रूप हे रूप उद्दीपन, नदि गुणों
की पर्दा और अंतिम द्वारा ए हृति है
रुप हे उक्ष संकृतिक हृति हे रूप
में दानना हे उपित एवं हृता एवं-

(i) भारतीय आधार पर गठित दोषों के बारे में
अन्य प्रकार के संक्षिप्त विविधता का ज्ञान है।
विशेष धार्याएँ, रायगढ़, जातीय (ज्यू), उपजागरुक
संक्षिप्त विविधता ज्ञानाति।

(ii) सुधारित आधार पर गठित दोषों के बारे में
छोटी से छायर पर संक्षिप्त विविधता पाई
जाती है। यहाँ साक्षरता आदिवासी दोषों के
बारे में गहरा ज्ञान गया था लेकिन
इसमें भी विशेष आदिवासी विविधता के
बारे में विविधता पाई जाती है।

(iii) सुधारित आधार पर गठित दोषों के बारे में
छोटी से छायर पर संक्षिप्त विविधता
पाई जाती है। यहाँ छोटी से छायर
अन्य छोटी से संक्षिप्त विविधता के
बारे में विविधता पाई जाती है।

(iv) अन्यराज्यीय विविधता :- भारत, अ. एवं
राज्य के भीतर संक्षिप्त विविधता के

~~good~~ उत्तराखण्ड पर इसी दोषों के संक्षिप्त विविधता
ज्ञानाता भी पाई जाती है। यहाँ अन्यराज्यीय
विविधता का यही उल्लेख प्रदेश के संक्षिप्त
ज्ञानाता पाई जाती है।

पर संक्षिप्त विविधता है जो यहाँ भी
ज्ञानाता है। अन्यराज्यीय विविधता के

उल्लेख, अधिक गहरा संक्षिप्त

कराते हैं। जैसे पहले का कि अत्यं गृही है।

प्राप्ति -

(i) राजभाषा के शिरोगांड वाद लगाने से वे चेतना
दी 'सुकृतिप्राप्यवाची' के पहचान विकल्प
दी लगती है। तभी उन्हें दी गयी
समीकृतिप्राप्यवाची के लिए उन्हें उपर्याख दाता है।
उन्हीं द्वारा दाता है।

(ii) यह जाभा काले दाता दी जाएगी - सुकृतिप्र
पहचान ग्रहण करती है। तभी उन्होंनी दिया
का विकल्प।

सुकृतिप्राप्यवाची मात्र है
सुकृतिप्राप्यवाची मात्र है। सुकृतिप्र
वाची के दाप-दाप छोड़े सुकृतिप्राप्यवाची है।
जो ऐ बोके होते हैं उन्हें होते होते का
प्राप्यवाची विकल्प है।

छोड़ीय विकल्प, विचारादेव द्वारा आदि दूसरे ग्रन्थों में

मात्र है, पुराणानि अथवा एवं इति
के विवरण एवं वाद एवं विवेद उपर्युक्त
होते हैं एवं एवं छोड़ीय विकल्प। छोड़ीय विकल्प
विचारादेव द्वारा एवं विकल्प है। इति
लिप्त है एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं
विकल्प है। इति-अल्पा इति। उपर्युक्त उल्लङ्घन,

पटना जिला के पुलियाबादी आय 1,31,000 रु है
जबकि छिंवड़ी के पुलियाबादी आय 20,000 रु है
ही बिहार और आप की घर अस्सिमा के बिंद्र
सहित उसे दोनों के विवेदात हैं।

ੴ ਅਸਥਾਨਲਾ ਹੋਰੀਪੁਰਾ

रा रामा गन्ता है। जिसके ने दो भाइयों के
पांग छुरा कर्दी, जिसे हाल बिलबिखित कर्या
दी। हाल जाकर हुआ—

- (i) ~~हिंगेरीप विधान की आवार पर दृष्टिपक्ष निर्दिशा~~
वी ~~कुलमात्र युद्धपत्र: 2000वि. की ही~~

(ii) ~~इन्हें छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड और झज्जरांग
प्रान्तिल हैं।~~

(iii) ~~इन नामों के उत्कृष्टी नामों के
प्रान्तों विधि नाम भाष्य एवं विधि की
हिंगेरीप विधान नाम विभागांच घाटे एवं
सिंधा घाटा पड़ता था।~~

(iv) ~~उठाएँगा के लिये, बल्यपुर्णों के विभाग
के बाद छत्तीसगढ़ विभाग के उन
पासों पर प्रधान प्रदेश हे अरका-पर्वत
यज्ञ दृष्टा है। तेलंगाना भी ऐसा पर्वतजड़दाहा है।~~

ଶ୍ରୀ ପତ୍ନୀ, କୁମାର ଦାସ

~~નંબુ વિશાળાદ્ય ઘારે ન રહે ગઈએ~~
જ પણ કો હથાપા કો વર્તમાન કો

35 वाले को देखते हैं। यह दिल्ली की नियमित दृश्यता है।
36 वाले हैं। जहाँ बिहारी ने दिल्ली की नियमित दृश्यता है।

कितीप दृश्यता के प्रतिक्रिया

नित नहीं नहीं रखते हैं एवं दूसरे वृक्षों
द्वारा दृश्यता के लिए क्या कितीप
दृश्यता का अपार्थना का आवधिकता है?

इसके जवाब हैं यह
आरे विषय देखते हैं वे आवधिकता हैं।

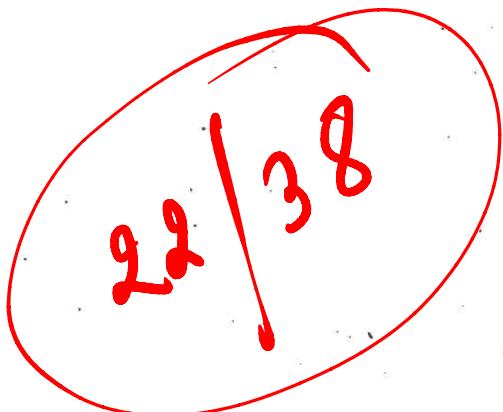
विशेषज्ञता दृश्यता
पर्याप्ति दृश्यता का विषय
विद्वानीति विद्वानीति
आपेक्षित दृश्यता दृश्यता
विशेषज्ञता में दृश्यता का विषय है।

आपेक्षित अवधुला
पर्याप्ति दृश्यता दृश्यता
विद्वानीति विद्वानीति
विद्वानीति विद्वानीति विद्वानीति
विद्वानीति विद्वानीति का विषय।

पर्याप्ति विषय की दृश्यता वह
विषय विषय है जो विशेषज्ञता की
आपेक्षित विषयता है विशेषज्ञता

प्रात रो उपर रखा बाला की हैंगाम
प्रवासीता ते साप - सर्व राष्ट्रीय अनुकूल
वे अचंता अद्भुत नहीं साप ही भट देश में
बिल औं सापन्ति दोहारे की छठावा ही

Later parts
could have included
more points.

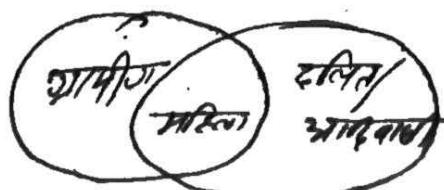


क्र० गीराव अंडेकर ने भारत के विदेशमालों के जीवन
का इस उद्देश के लिए, कलाश, सुपाला आदि
बाल्य के लिए इत्यता थी। जापानी महानाम
जनीनी घुणीकरण आदि प्राचीन विषयता जैसा
उत्तीर्णी के लिए इस इस इसके प्रभावों
के साथी साधन विद्युतीया जीवन।

51. मीराव अंकितकर ने संघानित आद्योगी दि-
विमुति की परिचयना की, जो है - स्वतंत्रता-
समाजता और शुद्धता। यह लिंग शुद्धता का ही
एप से का कारण लेती है जो प्रदत्तका है ना
परिवर्त नहीं।

आरती की साधारित असूयता, दोनों विषय

① सापांडि असपारा :- सापांडि असपारा हे ~
सापांडि असपारा - सापांडि असपारा किंवा
असपारा, गांडीज असपारा घासांडि सापांडि हे ~
याचे: १९६०५२ हे असपारा विधान सभा घासांडि
हे असपारा / आंदोलनी घटिला होता हे ~



(ii) राजनीतिक दुष्प्रभावः - लोकतंत्र के दुष्प्रभाव
एह सत्यमूर्छा अधिक है तो राजनीति

होते हरा राजनीति लूपीड़न का अनुदर्शन
करते हुए यह जाता है। अहं लूपीड़न विद्या
सम्बन्ध, विकास जैसे तुष्टि की प्रशंसनात्मक
का जातीय, धार्मिक और होमीय आधार की
वहाँ होता है।

(ii) आधिक विषयता :- भारत के आधिक विषयता
की सूची पर विवरण है। शाही-भावीय,
कीरी-लूपीड़न, अगाड़ा-लूपीड़न इत्यादि।

इन प्राचीनतमों के लूपीड़न
में भ. भीषण अवृत्ति के विवृति की
विवरण विस्तृत रूप में वर्णित हैं।

④ प्रतंगता :- अस्तित्व वृत्तंगता को माना
जीवन तथा उपर्युक्त विषय के
सहवर्षीय द्वारा गया है।

अस्तित्व वृत्तंगता के लूपीड़न
का हृष्ट विवरण के भाग 1-3 (अनुवृत्ति-12-35)
तथा मौलिक आधिका का प्राचीन विद्या
वर्णन है।

अनुवृत्ति-13 अंक 32. तथा 226 द्वारा

अहं लूपीड़न विद्या गया है जो मौलिक
आधिका का लात तथा लकड़ी

(५७) (सम्बन्ध): रामता रा द्वारा दो दोषी लापितराही
 दोषी लापितराही अवल प्रहर इन्हीं, अवल प्रहर इन्हीं
 दोषी लापितराही. आधिक या सुनिश्चित
 उपर्युक्त तुम्हे ना हो।

सम्बन्ध लापितराही - वायु २-

मिथुन एवं अस्त्राधित हैं। अवृद्धि १४-१८ है
 मुख्यता रा अस्त्रितराही प्रहर द्वितीय ग्राम है
 चिह्नों - ✓

- अवृद्धि - १४ - विष्वि है मुख्यता मुख्यता
- अवृद्धि - १५ - धूर्ण, घूलक्षण, जाति, लिंग, गमनपात्र हैं आवाहा
- अवृद्धि - १६ - लोड लिपोजन है, पर संक्षेप इव लिखेप
- अवृद्धि - १७ - अस्त्रपृष्ठपता एवं अंतर
- अवृद्धि - १८ - उपाधियों एवं अस्तर।

(५८) (वंश्युल):- वंश्युल रा उद्देश्य लापितराही अवृद्धि
 लापितराही की दृष्टि अवृद्धि लापितराही दृष्टि
 लापितराही हो।

सांखिक लापितराही है अवर्गत दृष्टि
 लापितराही लापितराही दृष्टि ग्राम है जो वंश्युल
 दृष्टि ग्राम हो लिखेप हो।

सम्बन्ध, मुख्यता वर्णन
 वंश्युल की पर विस्तृति लापितराही दृष्टि
 लापितराही एवं लिंग है जो अवर्गत
 लिंग है अव लिंग दृष्टि एवं लिंग है।

— याप (दक्षिणांग, दृष्टिकोण, उच्चता) द्वितीय होता है।
लेकिन क्या यहां प्राचीन है? स्थिता है?

विद्युतिकृत कारबंध - भाग

पर प्रदूषणमिह लगाती है।

(५) संविधान लगाए होंगे के अनुकूल होने वाले सापान्ति असपान्ता विधियां हैं। इन्हाँ-
में सामाजिक समाजाते हैं जो बहुत हैं।

(६) आर्थिक विधि वह उत्तरी छाती होती है।
जेंडर के शीर्ष पर लगाते हैं के पास ३८%
हैं।

1991 के उत्तरी उठने के बाद आर्थिक
विषयों परीक्षा हो गई है।

(७) दोषात्मक विधियां के उत्तरांग अवधारित हैं।
तरीके से बहुत हैं।

उत्तरी उठने के भावना के विवरण
दोषात्मक उत्तरांग उठता है। यहां
में रही उठा जा सकता है। यहां
विकल रहते।

विकल उपचार, उठने वालों के बाहर
विकल उपचार, उठने वालों के बाहर
के लक्षण देखते हैं। इसे कोर विकल
होता है। विकल उठने के आवश्यकता है।